

## महत्वपूर्ण वैज्ञानिक संदर्भ एवं पाठ्य सामग्री

—प्रो. पी.वी. शर्मा : चरक संहिता (अंग्रेजी अनुवादित संहिता), चौखम्बा ओरियन्टेलिया, गोकुल भवन, K-37/109, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-1 (भारत), प्रथम संस्करण, 1983

—राव मृत्युंजय एम व अन्य, "क्लिनिकल स्टडी ऑन द इफेक्ट ऑफ क्रव्याद रस, कासीसादि तैल वरिष्ठ एण्ड त्रिफला चूर्ण इन द मैनेजमेन्ट ऑफ अर्श "JRAS, खण्ड XXV, No. 1 व 2, जनवरी-जून, 2004, पेज नं. 1-10

—कविराज अत्रिदेव गुप्ता विद्यालंकार व अन्य, वाग्भट्ट विरचित अष्टांगहृदय, विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-1(भारत), 4<sup>th</sup> संस्करण, 1976

—शुक्ला एन के नारंग आर, नायर के, राधाकृष्ण एस और सत्यवती जी वी, "मल्टीसेंट्रिक रेन्डेमाइज्ड कन्ट्रोलड ट्रायल्स ऑफ क्षारसूत्र इन द मैनेजमेन्ट ऑफ फिस्टुला इन ऐनो", 1JMR B94 जून, 1991, पेज 177-185

### विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

महानिदेशक

केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्  
जवाहर लाल नेहरू भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी अनुसंधान भवन  
61-65 संस्थानिक क्षेत्र, 'डी' ब्लॉक के सामने, जनकपुरी,  
नई दिल्ली-110058

फोन: +91-11-28525520 / 28524457, फैक्स: +91-11-28520748

ई-मेल : dg-ccras@nic.in

वेबसाइट : www.ccras.nic.in / www.indianmedicine.nic.in

© सी.सी.आर.ए.एस. 2014

यह दस्तावेज केवल प्रचार, प्रसार एवं वितरण हेतु तैयार किया गया है, व्यावसायिक उपयोग के लिए नहीं। इस सामग्री का पुनरुपयोग सी.सी.आर.ए.एस. से अनुमति लेने के बाद ही किया जा सकता है।

# अर्श व भगन्दर



हरिद्रा



केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्  
आयुष मंत्रालय  
(आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी)  
भारत सरकार

## अर्श

विबंध के कारण अतिप्रवाहण से गुदमार्गगत रक्तवाहिनियां फूल जाती हैं जिसके कारण अर्श की उत्पत्ति होती है। शोथयुक्त रक्त-वाहिनियों के कारण गुदप्रदेश की गुदवलियों में तनाव एवं पीड़ा पैदा होती है।

## भगन्दर

यह एक असामान्य नाली के समान संरचना है जो दो आन्तरिक अंगों अथवा आन्तरिक अंग एवं त्वचा पर खुलने वाली गुहिका (Cavity) के बीच बन जाती है। भगन्दर शरीर के किसी भी भाग में हो सकता है परन्तु गुदप्रदेश में होने वाले भगन्दर को Fistula-in-ano कहते हैं।

## अर्श व भगन्दर के लक्षण क्या हैं?

- खाए गए आहार के आन्त्र में ही रूके रहने के कारण आन्त्रकूजन (Gigling sound)
- काश्य (emaciation) व उदगार बाहुल्य (excessive eructation)
- गुद प्रदेश द्वारा रक्त प्रवृत्ति
- गुद प्रदेश में शूल व दाह
- विबंध, अपानवायु अवरोध व क्षुधा ह्रास
- रक्ताल्पता, श्वास
- दौर्बल्य, काश्य



अपामार्ग



सूरण

## आयुर्वेद उपचार

- शौच-निवृत्ति के पश्चात् गुदप्रदेश को औषधीय जल अथवा कोष्ण जल से साफ करें
- ऐसे आहार एवं औषध का प्रयोग जो अनुलोमक (carminative) हों एवं जठराग्नि को बढ़ाएं
- तक्र का प्रयोग
- तुम्बरू, विडंग, देवदारु, यव एवं घृत के द्वारा गुद प्रदेश का धूपन
- प्रमुख योग: कांकायन वटी, अर्शकुठार रस, त्रिफला चूर्ण, तक्रारिष्ट, कुटजारिष्ट, भल्लातक वटी, कांकायन गुटिका आदि
- स्थानीय प्रयोग : जात्यादि तैल, कासीसादि तैल, शतधौत घृत आदि
- द्रोणी स्नान : उष्ण जल अथवा पंचवल्कल क्वाथ, फिटकरी युक्त त्रिफला या हरिद्रा क्वाथ के द्वारा

## बाद की अवस्था में

1. क्षारसूत्र : औषधीय सूत्र का प्रयोग

## अर्श व भगंदर में लाभदायक कतिपय औषधीय पौधे व औषधियोग

- मंजिष्ठा (Rubia cordifolia)
- हरिद्रा (Curcuma longa)
- चित्रक (Plumbago zeylanica)
- अपामार्ग (Achyranthes aspera)
- हरीतकी (Terminalia chebula)
- कुटज (Holarrhena antidysenterica)
- सूरण (Amorphophallus campanulatus)
- अभयारिष्ट
- द्राक्षासव



कुटज

## ✓ पथ्य (क्या करें)

- ✓ उष्ण, गुरु, मसालेदार एवं लवण द्रव्यों का सेवन न करें
- ✓ रेशेदार भोजन का प्रयोग
- ✓ रात्रि में सोते समय 3 ग्राम त्रिफला चूर्ण गुनगुने जल के साथ
- ✓ समय पर शौच निवृत्ति
- ✓ नित्य व्यायाम यथा टहलना, दौड़ना, तैरना
- ✓ हरी पत्तेदार सब्जियों, तक्र, अंगूर, अंजीर, अमरुद, अनार व सरलता से पचने वाले खाद्य पदार्थों का सेवन
- ✓ गुद प्रदेश को स्वच्छ रखें



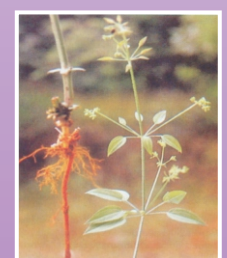
हरीतकी

## ✗ अपथ्य (क्या न करें) ✗

- ✗ शौच निवृत्ति के समय प्रवाहण (जोर लगाना)
- ✗ विरुद्ध एवं गुरु आहार
- ✗ मिर्च, मसाले व मांसाहार
- ✗ कब्ज से बचें
- ✗ अधिक समय तक लगातार बैठना
- ✗ प्राकृतिक वेगों का धारण



चित्रक



मंजिष्ठा